B-2
L-3

दिनांक
27-10-23

⇒ भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार :-

⇒ बंगाल

- 1717 में जब मुर्शिदकुली खां को बंगाल का सूबेदार बनाया गया तो उसने आर्थिक, प्रशासनिक व सैन्य सुधारों से बंगाल को एक मजबूत स्वायत्त इकाई के रूप में स्थापित कर दिया और अपनी राजधानी ढाका से मुर्शिदाबाद स्थानान्तरित कर दी। यद्यपि इसने मुगल शासन को नजराना देना जारी रखा। 1719 में उड़ीसा को भी बंगाल की दीवानी के साथ शामिल कर दिया गया और बाद में 1733 में शुजाउद्दीन के कार्यकाल में बिहार भी शामिल कर दिया।

- 1740 में जब अलीवर्दी खां ने घेरिया के युद्ध में सरफराज खां को मारकर सत्ता हासिल की तो यहीं से प्रशासनिक वर्चस्व का संघर्ष शुरू हो गया किन्तु अलीवर्दी ने कड़े नियंत्रण के बल पर बंगाल को कमजोर नहीं होने दिया इसने मुगल नजराने को रोककर बंगाल की वास्तविक स्वायत्तता की शुरुआत की।

अलीवर्दी अंग्रेजों की कूटनीति से वाकिफ था और उसने अंग्रेजों को मधुमक्खी के छत्ते के समान बताया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

प्लासी के युद्ध की पृष्ठभूमि

- 23 जून 1757 भारतीय इतिहास की वह तिथि है जब एक व्यापारिक कंपनी का रूपांतरण भारत की राजनैतिक ताकत के रूप में हुआ और इसी ने भारत की गुलामी की नींव रख दी।

वस्तुतः प्लासी के युद्ध की पृष्ठभूमि को दो भागों में बांटकर देखा जा सकता है-

1. सिराजुद्दौला का अति-उत्साही व्यक्तित्व प्रदर्शित होना और बंगाल की आन्तरिक राजनीति में फूट पड़ जाना।
2. अंग्रेजों की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा तथा बंगाल के संसाधनों पर एकाधिकार की सोच।

स्मरणीय है कि जब सिराजुद्दौला नवाब बना तो उसका विरोधी गुट तैयार होने लगा और इसी समय जब सिराज ने प्रशासनिक सुधारों के क्रम में पुराने कुलीन वर्ग के अधिकारियों को हटाकर नये वर्गों से नियुक्ति आरम्भ की तो सिराज का विरोधी गुट और मजबूत होने लगा और ये सभी विरोधी किसी भी तरह सिराज को गद्दी से हटाने का उद्देश्य रखते थे।

वस्तुतः जब मुर्शीदकुली खां ने बंगाल को एक मजबूत इकाई के रूप में ढाला था तो नवाब की योग्यता

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

के साथ ही कुलीन वर्गों, हिन्दू जमींदारों व धनी बैंकरों का समर्थन भी आवश्यक था किन्तु सिराज के निर्णयों से यह आधार कमजोर होने लगा।

दूसरी तरफ अंग्रेज जो उपनिवेशवादी सोच से प्रेरित थे उन्हें यह एहसास था कि उनके अधिकतम हितों की पूर्ति बंगाल ही कर सकता है। अतः वह भी युद्ध की रणनीति बनाने लगे और उन्होंने दो आधारों पर नवाब से विरोध को बढ़ावा दिया -

a. परंपरागत कारक के रूप में दस्तक का दुरुपयोग

b. तात्कालिक कारक में अंग्रेजों द्वारा सिराज विरोधी लोगों का समर्थन करना तथा किलेबंदी न करने की आज्ञा को न मानना।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

अंग्रेजों से क्रोधित होकर सिराज ने कलकत्ता पर आक्रमण कर दिया और विजय हासिल कर अंग्रेजों को फुल्टा द्वीप पर शरण लेने पर विवश कर दिया किन्तु प्रशासनिक भ्रष्टाचार तथा क्लाइव के नेतृत्व में मद्रास से जब सैन्य टुकड़ी कलकत्ता आ पहुंची तो अंग्रेजों का पलड़ा भारी हो गया और सिराज को अलीनगर की संधि स्वीकारनी पड़ी जिससे अंग्रेजों को किलेबंदी का अधिकार प्राप्त हो गया, जो यह संकेत देता है कि अब अंग्रेज मजबूत स्थिति में आ चुके थे।

इसके बाद क्लाइव की कूटनीति आरम्भ होती है जब उसने बड़ी चालाकी से सेनापति मीर जाफर, अधिकारी रायदुर्लभ व धनी बैंकरों के साथ सौदा कर लिया और इस तरह "फूट डालो और राज करो" की नीति से बंगाल का शक्ति सन्तुलन सिराज के विरुद्ध हो गया। शतरंज के खेल की तरह क्लाइव की कूटनीति ने यह पहले ही तय कर दिया कि युद्ध में किसको क्या भूमिका निभानी है।

अतः जैसे ही प्लासी का युद्ध आरम्भ हुआ कुछ मुट्ठी भर सैनिक ही सिराज की ओर से वास्तव में लड़े और मीर जाफर के नेतृत्व में सेना की बड़ी संख्या ने युद्ध में भाग ही नहीं लिया अतः कुछ ही घंटों में सिराज को हार का सामना करना पड़ा और न सिर्फ बंगाल बल्कि सम्पूर्ण भारतीय इतिहास को शर्मिंदगी उठानी पड़ी।

वास्तविक अर्थों में यह युद्ध न होकर षड़यन्त्र मात्र था क्योंकि युद्ध कौशल व सैन्य प्रदर्शन तो हुआ ही नहीं इसीलिए कहा जाता है कि यह इतिहास का अजीब संयोग है कि जिस युद्ध से भारत की गुलामी की नींव रखी गयी वह वास्तविक अर्थों में युद्ध ही नहीं था।

KGS IAS

प्लासी के युद्ध का परिणाम

राजनैतिक

⇒ EIC का रूपान्तरण एक व्यापारिक इकाई से राजनैतिक शक्ति के रूप में हुआ तथा अंग्रेजों ने अब बंगाल में कठपुतली नवाब बनाने शुरू कर दिये, जिससे उनके हितों की अधिकतम पूर्ति हो सके।

⇒ अंग्रेजों ने अपनी "फूट डालो और राज करो" की नीति का बंगाल में सफल परीक्षण किया। और यह नीति भारत में उनकी सबसे सफलतम नीति के रूप में बनी रही

⇒ अंग्रेजों की यह मनोदशा मजबूत हो उठी कि संख्या में कम होने के बावजूद हम आसानी से भारतीय शक्तियों को हरा सकते हैं।

आर्थिक

⇒ मीर जाफर ने नवाब बनाये जाने के पुरस्कार स्वरूप 24 परगना की जमींदारी अंग्रेजों को सौंप दी, जिससे अंग्रेजों को एक सुनिश्चित भू-राजस्व प्राप्त होने लगा और क्लाइव को भी एक निजी जागीर भेंट की।

⇒ प्लासी की विजय के बाद अंग्रेजों ने नजराना, भेंट, क्षतिपूर्ति आदि के रूप में बंगाल के नवाब से भारी धन प्राप्त किया। एक आकलन के अनुसार 1756 से 60 के मध्य लगभग 2.25 करोड़ रुपये की वसूली की।

⇒ बंगाल अंग्रेजों के व्यापार का सबसे महत्वपूर्ण केन्द्र था एशिया के समस्त व्यापार का 60% हिस्सा बंगाल से ही प्राप्त होता था और इसके बदले अंग्रेजों को बड़ी मात्रा में

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

बुलियन भेजना पड़ता था किन्तु प्लासी की विजय के बाद अब अंग्रेजों ने बंगाल के संसाधनों या राजस्व से ही खरीदारी शुरू कर दी और यहीं से बंगाल से धन निकासी की परंपरा आरंभ हो गयी और दुनियां का समृद्ध प्रांत क्रमशः गरीबी और अकालों की समस्या से जूझने लगा।

प्रश्न - 23 जून 1757 के बाद भारत में मध्य युग की समाप्ति और आधुनिक युग का आरम्भ हुआ। स्पष्ट कीजिए।

- प्रस्तुत कथन यह स्थापित करना चाहता है कि अंग्रेजों की प्लासी की विजय के बाद क्रमशः भारतीय मध्य कालीन व्यवस्था को मिटा कर यूरोप आधारित आधुनिक व्यवस्था की नींव रखी जाने लगी।
- यह कथन उस प्रशासनिक व्यवस्था के सन्दर्भ में उचित दिखता है कि मुगलिया दरबारी संस्कृति की जगह आधुनिक प्रशासनिक पद्धति की शुरुआत हुई और धीरे-धीरे सामाजिक, आर्थिक व शैक्षणिक क्षेत्रों में भी बदलाव किया जाने लगा।
- किन्तु इतिहास की वास्तविक समझ मध्य युग व आधुनिक युग को कालखण्डों के अनुसार नहीं बल्कि प्रवृत्तियों के आधार पर निर्धारित करता है और आधुनिक युग से आशय लोकतंत्र मानवतावाद तथा तर्क व विवेक की प्रधानता को देता है।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

- अतः इस दृष्टिकोण से इस कथन को सम्पूर्णता में स्वीकारा नहीं जा सकता क्योंकि प्लासी की विजय के बाद आधुनिकता की जगह ब्रिटिशीकरण को जन्म दिया गया और भारतीय संसाधनों की लूट की गयी। निष्कर्षतः आरम्भिक राजनैतिक परिवर्तन के सन्दर्भ में आंशिक रूप से इस बदलाव को तो माना जा सकता है किन्तु इसे आधुनिक युग की शुरूआत के रूप में नहीं देखा जा सकता।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR